LOK SABHA

*Friday, March 22, 1968/Chaitra 2, 1890 (Saka)*

*The Lok Sabha met at Eleven of the Clock.*

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

MR. SPEAKER : The House will now take up Questions.

Shri Ramji Ram.

AN HON. MEMBER : He is not here.

MR. SPEAKER : Shri Molahu Prasad.

श्री मोलहू प्रसाद : प्रश्न संख्या 778।

THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (DR. KARAN SINGH): (a) Experiments on artificial rain have been carried.....

श्री मधु लिमये : मंत्री महोदय कृपया हिन्दी में उत्तर दें क्योंकि उक्त माननीय सदस्य अंग्रेजी नहीं जानते हैं।

MR. SPEAKER : There is simultaneous translation being done. If the Minister is to give his reply in both the languages then the translation becomes useless.

AN HON. MEMBER : It must be left to the Minister.

MR. SPEAKER : If he answers in Hindi nobody has any objection because translation is there for both the languages.

श्री मधु लिमये : मूल प्रश्न चूंकि हिन्दी में है इसलिए उसका जवाब भी हिन्दी में आना चाहिए।

MR. SPEAKER : May be so.

डा० कर्ण सिंह : (क) निम्नलिखित राज्यों में भूतकाल.....

SHRI S. KANDAPPAN : Sir, it is very unfair to compel a Minister to speak in Hindi.....(*Interruptions*).

MR. SPEAKER : I agree. On the floor of this House anybody can choose his language, particularly Hindi or English.

SHRI S. KANDAPPAN : Sir, It is humiliating for the non-Hindi-speaking Members. After all, in spite of our desire to have the regional languages we have agreed to English in the larger interest of the country. It should be appreciated by the Hindi-speaking people.

MR. SPEAKER : The Minister can choose his language. Nobody can compel. After all, both the translations are given. If the answer is given in English the Hindi people will get the translation in Hindi and if the answer is in Hindi there is translation in English. Nobody can compel a Member to speak either in this language or that language.

AN HON. MEMBER : Why did he yield ?

SHRI S. KANDAPPAN : Even otherwise the Hindi Members have got some privilege over others here.

डा० कर्ण सिंह : अध्यक्ष महोदय, चूंकि मूल प्रश्न हिन्दी में था इसलिए मुझे आप उस का उत्तर हिन्दी में पढ़ने की इजाजत दें।

DR. RANEN SEN : Then why did you start in English ?

**कृत्रिम वर्षा सम्बन्धी प्रयोग**

\+

*778. **श्री मोलहू प्रसाद :**
**श्री रामजी राम :**

क्या **पर्यटन तथा असैनिक उड्डयन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) किन-किन राज्यों में कृत्रिम वर्षा के प्रयोग किये गये हैं; और

(ख) किन राज्यों की जलवायु इन प्रयोगों के अनुकूल है तथा किन राज्यों की जलवायु उनके प्रतिकूल है ?

**पर्यटन तथा असैनिक उड्डयन मंत्री (डा० कर्ण सिंह)** : (क) निम्नलिखित राज्यों में भूतकाल में कृत्रिम वर्षा पर प्रयोग किये गये हैं:—

(i) संघीय राज्य क्षेत्र, दिल्ली;

(ii) उत्तर प्रदेश (आगरा) ;

(iii) राजस्थान (जयपुर);

(iv) केरल (मुन्नार); और

(v) मद्रास (तिरुचिरापल्ली)

(ख) कृत्रिम वर्षा के लिये उपयुक्त समझे गये क्षेत्र ये हैं:—

(i) **दक्षिण-पश्चिम मानसून काल** : समुद्र तटीय प्रदेशों के सिवाय देश के सब क्षेत्र।

(ii) **उत्तर-पूर्वी मानसून काल** : तमिल नाद का कुछ भाग तथा आन्ध्र प्रदेश का कुछ भाग।

(iii) **शीतकाल** : जम्मू और काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और आसाम के पर्वतीय प्रदेश।

इससे पहले कि कृत्रिम वर्षा के प्रयोगों का वाणिज्यिक दृष्टि से उपयोग किया जा सके, उपरि निर्दिष्ट क्षेत्रों में लगातार पांच वर्षों (सीज़न) तक मार्गदर्शी प्रयोग (पाइलॉट एक्सपेरीमेंट) करने पड़ेंगे।

**श्री मोलहू प्रसाद** : इस कृत्रिम वर्षा संबंधी प्रयोग के सम्बन्ध में अब तक कितनी देशी और विदेशी मुद्रा खर्च की गई है ? कितने विदेशी विशेषज्ञों से सहायता ली गई है और उस में जो अधिकारी काम कर रहे हैं उन के नाम तथा पदनाम क्या हैं और उन के भत्ते आदि में कुल मिला कर कितना खर्च किया गया है ? क्या इस योजना को समाप्त करक छोटी सिंचाई योजना के साधनों को जुटा कर किसानों को दिया जायगा ?

**डा० कर्ण सिंह** : कोई 4,5000 रुपया प्रतिवर्ष एक प्रोजैक्ट के ऊपर हमारा नौन रैकरिंग खर्च होता है और 30,000 रैकरिंग खर्च होता है। लोग जो सारे इस में काम कर रहे हैं उन की जानकारी इस समय मेरे पास नहीं है। यह हमारे इंडियन मैट्रोलाजिकल डिपार्टमेंट से सम्बन्धित कार्य है। छोटी सिंचाई एक अलग विषय है लेकिन उस का भी बहुत महत्व है। माननीय सदस्य का यह कहना कि कृत्रिम वर्षा का महत्व कम है और छोटी सिंचाई का अधिक है यह ठीक है और मैं मानता हूं कि लघु सिंचाई योजना की बड़ी आवश्यकता है लेकिन अगर इस प्रकार की कृत्रिम वर्षा की जा सके तो इस में देश को बहुत लाभ हो सकता है। कृत्रिम वर्षा सम्बन्धी प्रयोग कार्य पर हम इस समय जो पैसा खर्च कर रहे हैं वह बहुत अधिक नहीं है।

**श्री मोलहू प्रसाद** : अध्यक्ष महोदय, अभी मेरे पूर्व प्रश्न का पूरा जवाब नहीं आया है कि कितने विदेशी विशेषज्ञों की सहायता ली गई ?

**डा० कर्ण सिंह** : जहां तक मेरी जानकारी है विदेशी विशेषज्ञ इस समय यहां इस कार्य में कोई काम नहीं कर रहा है। अलबत्ता विदेशों में बहुत से इस तरह के प्रयोग कार्य हुए हैं और उन की जानकारी हम प्राप्त करते हैं लेकिन इस समय जहां तक मेरा विचार है कोई विदेशी विशेषज्ञ इस में काम नहीं कर रहा है।

SHRI BEDABRATA BARUA : The Minister has just said that artificial rain will be commercially exploited. Is there any danger of this artificial rain being politically used to break up other people's meetings ?

DR. KARAN SINGH : Artificial rain I do not think lends itself very well to political utilisation though, certainly, for our agricultural development we are trying to use it. It is still in a very embryonic stage all over the world, but the control that weather offers in the next one or two decades

will be one of the most exisiting projects in the development of humanity.

SHRI TENNETI VISWANATHAM : Is it presumed that this artificial rain will produce artificial grains ?

**श्री महाराज सिंह भारती** : चूंकि वर्षा का सीधा सम्बन्ध हवा के अन्दर पानी की मात्रा और तापमान से है यह जानना चाहता हूं कि आप बनावटी ढंग से जो बारिश करेंगे तो जो मौजूदा नमी की मात्रा है वह बारिश की शक्ल में आ जायगी लेकिन इस से कहीं ऐसा डर तो नहीं है कि उस बारिश के कराने के बाद फिर अपने समय पर जो होने वाली बारिश थी उस को भी बनावटी ढंग से कराना पड़ जाय और पूरे साल भर तक लगातार हमें बनावटी बारिश करानी पड़ जाये ? अगर तापक्रम जरूरत से ज्यादा ठंडा हो गया तो बारिश के बजाय ओले भी पड़ सकते हैं जिससे कि क्षति होने का डर रहता है तो मंत्री महोदय इन दोनों बातों का जवाब दें ?

**डा० कर्ण सिंह** : ऐसा कोई खतरा नहीं है कि यदि किसी समय कुछ कृत्रिम वर्षा की जाय तो फिर दूसरी वर्षा नहीं होगी। ऐसी बात नहीं है। दो प्रकार की वर्षा होती है। एक कोल्ड सीडिंग और दूसरी वार्म सीडिंग है। कोल्ड सीडिंग वहां है जहां बहुत ऊंचे बादल हैं और जो बहुत ठंडे होते हैं तो उस क्षेत्र में कोई वहां जाकर सीडिंग करेंगे। इस तरह की वर्षा का क्षेत्र थोड़ा ही होता है जहां कि यह थोड़ा फ्रीजिंग तापमान से होता है इसलिए इस में कोई ऐसा डर नहीं है कि इस से साधारण वर्षा पर कोई असर पड़ेगा। प्राकृतिक रूप से होने वाली वर्षा पर कोई फर्क इस कृत्रिम वर्षा के कारण नहीं पड़ेगा। जहां तक ओलों का सम्बन्ध है उस के बारे में यह चीज है कि जहां ओले पड़ने का खतरा होता है उस खतरे को टालने की कोशिश की जाती है। हमारे कुछ साइंटिस्ट्स यह यत्न कर रहे हैं कि जहां देखा जाय कि इस प्रकार के बादल आये हैं, जहां ओले पड़ना का खतरा है और इस तरह ओले पड़ने से जो नुक्सान होगा तो उस में भी कुछ एक विशेष प्रकार की सीडिंग करके इन ओलों को वर्षा के रूप में नीचे ला रहे हैं। यहां पर मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि अभी इस विषय में ऐक्सपैरिमेंट्स ही हो रहे हैं, यह आरम्भिक ही हैं और हम इस में कुछ आगे नहीं बढ़े हैं लेकिन बढ़ने का प्रयत्न कर रहे हैं।

SHRI M. B. RANA : Will the hon. Minister be pleased to state the area covered by one experimental artificial rain in acres or miles ?

DR. KARAN SINGH : It is an area of 500 square kilometres.

**श्री नन्द कुमार सोमानी** : अध्यक्ष महोदय, कृत्रिम वर्षा का सब से ज्यादा प्रयोग खाद्य और कृषि के मामले में होता है। इस के विषय में काफ़ी प्रगति और अनुसंधान की आवश्यकता है। मैं आप के जरिए मंत्री महोदय से पूछना चहता हूं कि इस विषय को उन्होंने अपने मातहत क्यों ले रक्खा है और अगर इसमें अगले पांच वर्षों में उन्नति करनी होगी तो इस विषय को खाद्य और कृषि मंत्रालय को क्यों नहीं सौंप देते ?

**डा० कर्ण सिंह** : यह विषय मेरे मंत्रालय में इस समय इसलिए है कि इंडिया मैट्रोलाजिकल डिपार्टमेंट ही यह सारे वैदर वार्निंग के कार्य को चला रहा है। और मैट्रोलाजिकल डिपार्टमेंट मेरे मंत्रालय से सम्बन्धित है। लेकिन हम इस सिलसिले में फूड मिनिस्टरी के साथ बातचीत करते हैं और उन से पूछ-ताछ करके आगे इस में काम करते हैं।

PAKASTANI INFILTRATORS IN GUJARAT

+

780. SHRI T. M. SHETH:

SHRI HARDAYAL DEVGUN:

Will the Minister of HOME AFFAIRS be pleased to state :

(a) whether it is a fact that a large number of Pakistani nationals have recently entered into the Gujarat territory bordering Pakistan;